



# BOSCO ECHOES

December 2023 | Issue No. 2 | Year 14



S. Mugdha Sri  
VII - C



- 
- 
- **RECTOR'S MESSAGE**
  - **FROM THE PRINCIPAL'S DESK**
  - **FOREWORD**
  - **SUPERVISOR IN-CHARGE**

- \* CLEONA QUADRAS

- **EDITORS**

- \* SUMITRA ADHIKARI
- \* NEERU NIGAM
- \* DEEPA ALOK
- \* KANCHAN KAKADE
- \* PUSHPLATA VIND
- \* RIVITA PADGHAN
- \* ALKA PANWAR
- \* SARITA SINGH

- **BUDDING WRITERS AND POETS**

- **DESIGN AND LAYOUT**

- \* BRIJLAL PRAJAPATI

- **COVER PAGE DESIGN**

S. MUGDHA SRI VII - C





## Self Realization



*I remember when working with the street drug addicts children in Don Bosco Therapeutic Centre, 'Maria Ashiana', Lonavla. Shankar (name changed) was very happy after a skit performance for our visitors (a group of NGO volunteers from Mumbai). He said, "I used to see, this didi every morning and evening on CST railway station, she never even noticed me then, today she came and sat with me and spoke to me for such a long time, she clapped at my performance, I am so happy, I feel I am not ignored anymore by her, I feel proud of myself."*

We are all rough diamonds that need the 'right polisher and the right polish' to shine bright, while we find our school and our social environment giving us ample opportunities to bring forth our talent. The actual fact is, that we have all the talent and potential to be the best person we are meant to be. It is all within us, it only needs to be brought out. This bringing out process is not only our coaching classes, classroom, value education performances and other types of opportunities presented to us. It is actually our self realization!

The age old Rishis taught us the importance of meditation one's own self, mind, finding answers from within our own self. We can say in today's language, We are our own 'Google', if we, but, search our own souls and find all the potentials, talents, wisdom and happiness in our own self. 'Aum Brahman Asi' (I am Brahman- from our own Hindu philosophy), God is in me and I need to discover him in me. In discovering myself, I come to Self-Realization! And Self-Discovery. I realize I do not need to be aggressive to assert or express myself, or all the while go to 'Google' for answers.

I come to understand myself and the why and what of so many items that marvel me about myself and my universe. The answers lie in my self realization, they are very much in me. I only need to learn to meditate, sit calm each day before I wake or go to bed and think of the person I have been this day or the person I want to be this day! This exercise is sure to help me realize what I am in this world for, day by day.

Happy meditating to realize your true self!

"Advent is a time of waiting for the Lord, but it also means preparation for the birth of Jesus, The light of the world, Let us as we ready our hearts this Christmas become beacons of hope, joy and peace to our world" Merry Christmas!

**Fr. Barnabe D'Souza sdb**





## Bharat Darshan



India's richness lies not only in its geographical diversity but in the myriad traditions, languages, and customs that thrive within. From the colourful festivals to the warmth of its people, each place I've visited echoes its unique essence, adding layers to the tapestry of India's heritage.

On my visits to the touristy places, I peeked through the heart of rural India. It has been an enlightening voyage, revealing the beauty of simplicity and the profound unity in shared human experiences. Beyond the bustling cities and tourist destinations, the soul of India resides in its villages, where life unfolds at its own unhurried pace.

In villages across Maharashtra, Kerala, Karnataka, Tamil Nadu, Himachal Pradesh, Goa, Bengal and beyond, I discovered a thread that binds us all. Despite our diverse backgrounds, cultures, and languages, the simplicity of rural life unites us. The welcoming smile, the joy in sharing a meal, and the laughter that resonates across village gatherings speak a universal language.

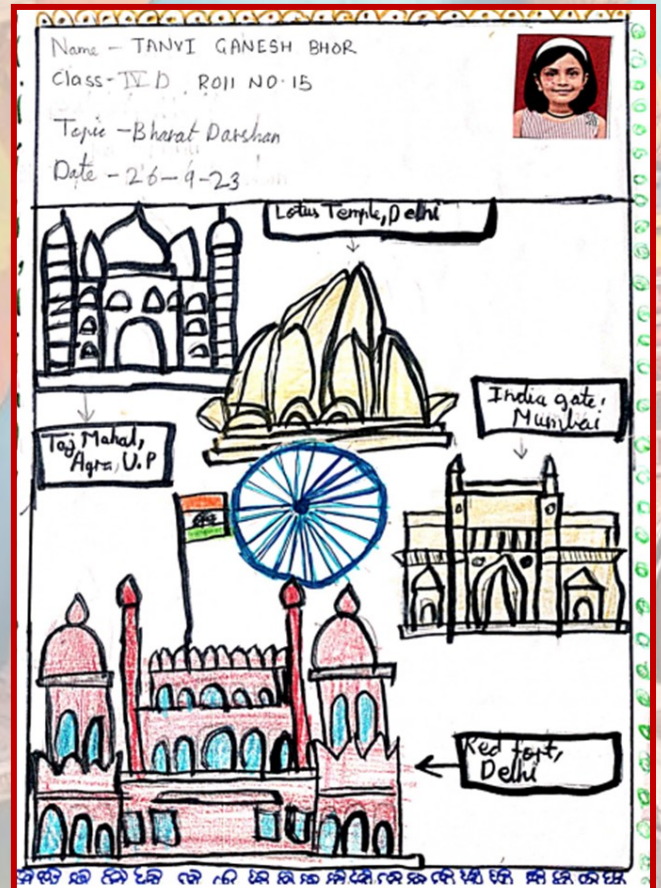
Moreover, in these villages, I found that our problems, too, are remarkably alike. The quest for clean water, access to education, healthcare, and sustainable livelihoods are challenges that resonate from north to south, east to west. Yet, amidst these challenges, there's an unyielding spirit, an innate resilience that echoes in the heart of every villager. Their determination to overcome obstacles and their unwavering sense of community exemplify the strength found in unity.

As I reflect on my journey, I realize that India's beauty and diversity are boundless. The allure of this land is infinite, beckoning travellers like me to explore, visit, and immerse ourselves in its riches, ever fascinating and always beckoning.

I implore all of you to discover and rediscover our beautiful country.

*Principal*

*Don Bosco Sr. Secondary School, Nerul*





### संपादकीय



अतुल्य भारत की विविधताओं को संकलित करते हुए देश के विभिन्न क्षेत्रों की विशेषताओं को डॉन बाँस्को विद्यालय परिवार की पत्रिका के माध्यम से आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। विद्यालय पत्रिका का उद्देश्य छात्र – छात्राओं सहित विद्यालय परिवार के शिक्षक – शिक्षिकाओं की साहित्यिक प्रतिभा को लिपिबद्ध करके पाठकों के सम्मुख लाना रहा है। लेकिन इसके साथ – साथ पत्रिका के लिए रचनाओं के संकलन और उससे संबंधित विभिन्न कार्य कलापों के माध्यम से परस्पर समन्वय और सहयोग की भावना का विकास करना भी रहा है। पत्रिका के इस अंक में विद्यालय के छात्र – छात्राओं ने महज़ शैक्षणिक पाठ्यक्रम से बाहर झाँककर अपनी जड़ों के साथ जुड़ने का प्रयास किया है। अपने-अपने मूल निवास वाले राज्यों के पारंपरिक उत्सवों, पर्वों, वहाँ के रहन – सहन, वेशभूषा एवं सामाजिक ताने – बाने के बारे में मार्मिक वर्णन इस अंक की विशेषता है। आशा है कि पाठकों को पत्रिका का यह अंक पसंद आएगा। हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतज़ार रहेगा।

सुमित्रा अधिकारी,  
हिंदी विभाग



॥ Asmi Nisha Bhanvilkar ॥ V-A ॥ Roll no = 70 ॥ NO USE - ॥



## मेरा गाँव मेरा देश – ग्राम दर्शन, भारत दर्शन

मुंबई में प्रवास करते हुए हमें करीब २० वर्ष पूरे हो गए हैं। इन बीस वर्षों में मुंबई की सीमाओं में अभूतपूर्व फैलाव हुआ है। नवी मुंबई सहित कई उपनगर दक्षिण मुंबई स्थित मालाबार हिल्स, नरीमन प्वाइंट, बांद्रा, कोलाबा इत्यादि स्थलों से किसी भी दृष्टि में कम नज़र नहीं आते। अक्सर सुनसान रहने वाली पाम बीच सड़क अब व्यस्त हो गयी है, वाशी से पनवेल तक रेलवे लाइन के दोनों तरफ़ की खाली ज़मीन पर उगाई जाने वाली सब्जी की क्यारियाँ अब कम ही नज़र आती हैं। भुतहा इमारतों का क़स्बा सा दीखने वाला बेलपुर, सही मायनों में अब CBD बेलपुर बन गया है और माल, ऑफ़िसों, बार एवं रेस्तराँओं से पट गया है। शाम के वक्त अगर आप वहाँ चले गए तो कुछ समय के लिए ऐसा आभास होता है जैसे किसी विदेशी शहर में आ गए हों। रहन – सहन, खान – पान, पहनावा, नौकरी – पेशा आदि सभी क्षेत्रों में बड़ा बदलाव आया है। लेकिन इतने वर्षों में जीवन में अगर कुछ नहीं बदला तो वह है उत्तराखण्ड में चम्पावत स्थित अपने मूल निवास स्थान, अपने गाँव की यात्रा, चाहे वह कितने ही कम समय के लिए ही क्यों ना हो। पहले जब बच्चे छोटे थे, तब रेलयात्रा का कौतूहल रहता था, फिर समय की तंगी के कारण हवाई यात्रा आवागमन का साधन बनने लगी। विकास अगर संतुलित हो तो उससे जीवन में सहूलियत तो ज़रूर आ जाती है बशर्ते कि संसाधनों की भी कमी न हो। खैर अगर ठीक से योजना बनाई जाय तो मुंबई से चम्पावत अब अपेक्षाकृत कम समय में पहुँचा जा सकता है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र छोड़कर जैसे ही पहाड़ों की तरफ़ आगे बढ़ते हैं, मुख्य सड़क के किनारे और ज़िला या तहसील मुख्यालयों में अंधाधुंध निर्माण कार्यों को अगर छोड़ दें तो जैसे – जैसे हम शहरी क्षेत्र से दूर जाते हैं, बदलाव की रफ़्तार धीरे – धीरे कम होने लगती है। और जब हम मैदानी क्षेत्र के अंतिम छोर पर पहाड़ों के प्रवेशद्वार टनकपुर पहुँचते हैं तो पहाड़ों की शीतल हवा के झोंके शरीर में रोमांच पैदा कर देते हैं। साल, सागौन के बाद चीड़, देवदार और फिर बाँज और बुराँश के पेड़ों के बीच से होती हुई सर्पिली सड़क के रास्ते जब हम चंपावत पहुँचते हैं तो ऐसा लगता है कि ज़िंदगी ठहर सी गई है। सुकून भरे वातावरण में यह छोटा सा शहर ऐसा लगता है जैसे ब्रह्मांड भर में इससे सुंदर कोई और जगह ही नहीं होगी।

महानगरों की चीं – चीं, प्यों – प्यों से दूर पहाड़ के जीवन में ठहराव नज़र आता है। ढलती दुपहरी की गुनगुनी धूप में ना चाहते हुए भी आँखें नींद का आवरण ओढ़कर निश्चिंत हो जाती हैं। शाम की चाय में परिवार ही नहीं कभी – कभी तो पूरा का पूरा गाँव उमड़ आता है। शाम का सूरज जब पहाड़ों के पीछे डूबने को आतुर हो जाता है तो धूप अपना ताप छोड़ देती है। मखमली शाम में ठंड हवा के सर्द झोंके मौसम को खुशनुमा बना देते हैं। रात की काली चादर में जुगनुओं की टिम – टिम रोमांचित कर देती है। रात ढलते ही आस पड़ोस के लोग एक जगह एकत्र होकर अलाव के चारों ओर घेरा लगाकर बैठ जाते हैं। उनमें ना कोई बड़ा होता है और ना छोटा, ना अमीर ना गरीब, ना सुखी और न दुःखी; सभी एक समान, सबके एक ही जैसे अरमान। शहरों की किट्टी पार्टियों की प्रतियोगितात्मकता के विपरीत यहाँ आपसी सहयोग, समन्वय, दुख-सुख में साझेदारी की मिसाल, छोटी बड़ी कई कहानियाँ फूट पड़ती हैं। उन किस्से कहानियों में लोक गाथाओं से लेकर वर्तमान परिस्थितियों तक, सीमा की हलचलों से लेकर खेल के मैदानों तक, खेत खलिहानों से लेकर राजनीति के गलियारों तक की सभी घटनाओं का थोड़ा – थोड़ा पुट मिल जाता है। गाँवों की सुबह अलसाई सी होती है, उसमें ऑफिस के लिए ट्रेन की सीट छूट जाने की या फिर वाशी टॉल नाके पर भयंकर ट्रैफ़िक जाम में फँस जाने की चिंता नहीं होती। सुबह के कोहरे से ढकी वादियों के वर्णन के लिए कोई शब्द बने ही नहीं, बन भी नहीं सकते क्योंकि वह नज़ारा अवर्णनीय होता है। हिमालय की तलहटी पर बादलों के अंबार से ऊपर उठती हुई हिमाच्छादित चोटियों पर पड़ती हुई सूरज की स्वर्णिम किरणों का दृश्य कल्पना लोक में ले जाता है।

दिन चढ़ने के साथ शुरू होता है लोगों से मिलना-मिलाना। कोई घर आता है, किसी के घर जाना पड़ता है। दुनियादारी, रिश्ते – नाते, यारी – दोस्ती सब निभाने पड़ते हैं, और इसी उधेड़बुन में पता ही नहीं चलता की छुट्टियों के दिन कब ख़त्म हो गये। सारा गाँव फिर उमड़ पड़ता है, विदा करने को, बिना बुलाए, बिना परवाह किए। अनमने मन से क़दम उठते हैं, कार धीरे – धीरे रफ़्तार पकड़ने लगती है, गाँव फिर पीछे छूटने लगता है, ज़हन में फिर से वही चिंताएँ सालने लग जाती हैं, छुट्टी की अर्ज़ी, झाड़ू पोंछा, बर्तन कपड़े, लेसन प्लान, प्रश्नपत्र, लोन की ई एम आई, इत्यादि फिर से मानस मन को जकड़ने लगती हैं। जाने पहचाने शहर में फिर से अजनबियों की तरह पहुँचते हैं और फिर से अदृश्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने – अपने सांसारिक कार्यों में जुट जाते हैं। लेकिन दिल के कोने में कहीं ना कहीं से आवाज़ ज़रूर निकलती है जो कहती है 'आ लौट के आज मेरे मीत.....'

सुमित्रा अधिकारी



## Education.....a voyage of discovery

*“Education stands as the most potent tool one can wield to reshape the world”- Nelson Mandela*

Global integration of education has become the pivotal element of the developmental strategies adopted by nations worldwide. India too has ensured that it is not left behind. According to a recent article in the Hindustan Times, India's higher education landscape boasts of an incredible 38 million students across approximately 50,000 educational institutions, including 1057 reputed universities. Globally it is also the second largest contributor of international students. The National Education Policy (NEP) 2020 aims at opening up India's thus far traditional and tightly regulated academic system, to the inclusivity and collaboration characteristic of the global stage.

Allowing foreign universities to open up campuses in India, adoption of a flexible curriculum to explore global subjects, fostering a robust research culture attracting international scholars and researchers, lifelong learning via multiple entry and exit points during the educational journey, technology driven learning, upskilling and reskilling, multilingual education, integrating vocational education with general education, fostering international collaboration and mobility etc. are all initiatives that showcase India's transformative educational landscape geared towards fostering a more globally connected academic community.

Dear students, you possess an enormous reservoir of energy, passion, and creativity. The torchbearers of change, innovation and advancement, it is you who can play a pivotal role in nation -building. By providing high quality education, encouraging parental involvement in education and fostering a culture of excellence, parents and teachers can harness students' potential effectively, and ensure that they become the architects of the future, capable of moulding the nation's destiny. Always bear in mind the words of Benjamin Franklin- *“Tell me and I forget. Teach me and I remember. Involve me and I learn.”*

**Fr. Barnabe D'Souza sdb**





## INDIA – Where everyone feels at home

India stands out as a highly sought-after tourist destination in Asia, and for good reason. The country boasts a captivating blend of breathtaking landscapes, a profound cultural legacy, majestic monuments, and a rich ancient history. With its historical forts, caves, temples, and more, India offers a diverse tapestry that captivates tourists.

The nation's allure lies in its diversity, encompassing a myriad of traditions, languages, and festivals. Among the renowned tourist hotspots are Agra, famed for the iconic Taj Mahal - one of the seven wonders of the world; Goa, celebrated for its pristine beaches along the Arabian Sea; Jammu and Kashmir, often referred to as "heaven on Earth"; and Jaipur, known as the Pink City, among others.

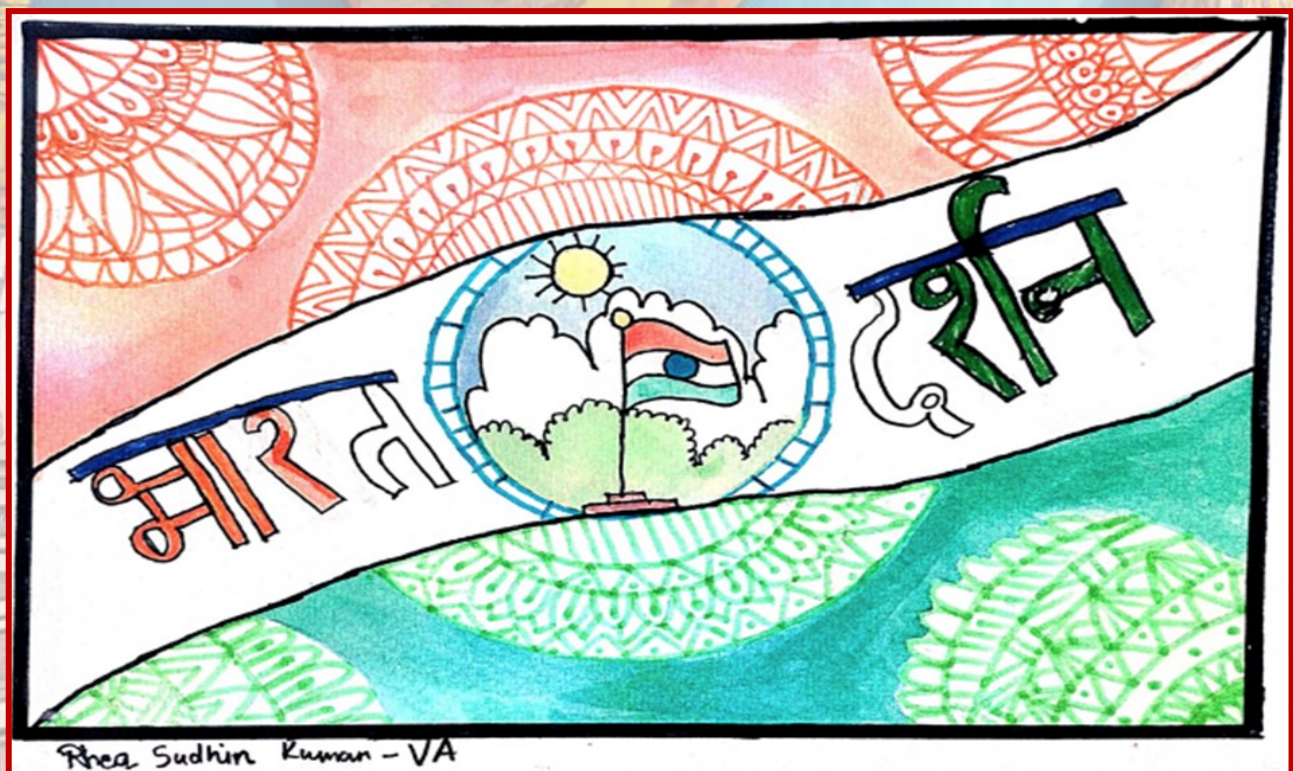
India is adorned with prominent monuments, including the Red Fort, Gateway of India, Ellora Caves, Hawa Mahal, Lotus Temple, and Jantar Mantar in Jaipur. The cultural mosaic of India, a fusion of numerous influences spanning millennia from the Indus Valley Civilization to other early cultural realms, encompasses diverse elements such as religion, mathematics, philosophy, cuisine, dance, and music.

As the birthplace of Buddhism and Hinduism, two of the world's oldest religions, India holds a unique spiritual significance. The country observes a myriad of festivals like Diwali, Dussehra, Holi, Ganesh Chaturthi, each contributing to the vibrant tapestry of Indian culture.

What truly sets India apart is its ingrained values of hospitality, respect, and politeness, making visitors feel welcomed and cherished. These qualities, intertwined with the country's rich cultural heritage and diverse attractions, make India an unparalleled and preferred tourist destination in Asia.



**Zoya Fyaz Ansari - X A**





## Bharat Darshan

In the heart of India, where traditions gleam,  
A journey through cultures, like a vivid dream.  
From the North's festive Diwali nights,  
To the South's Pongal, in colorful lights.

Eastern rhythms in Durga Puja's sway,  
Temples adorned, lively drums play.  
In the West, Garba's vibrant spin,  
Navratri's joy, a lively din.

Bharat Darshan, a tale so grand,  
Traditions weaving through the land.  
Winter dances, summer beats,  
Cultural rhythms, in every street.

Onam's harvest, Holi's colour,  
In every tradition, is the tricolour.  
From East to West, North to South,  
Bharat's traditions, in every mouth.

Stories unfold, in every part,  
Cultural treasures, a work of art.  
Bharat Darshan, let's all unite,  
In traditions' embrace, so pure and bright.



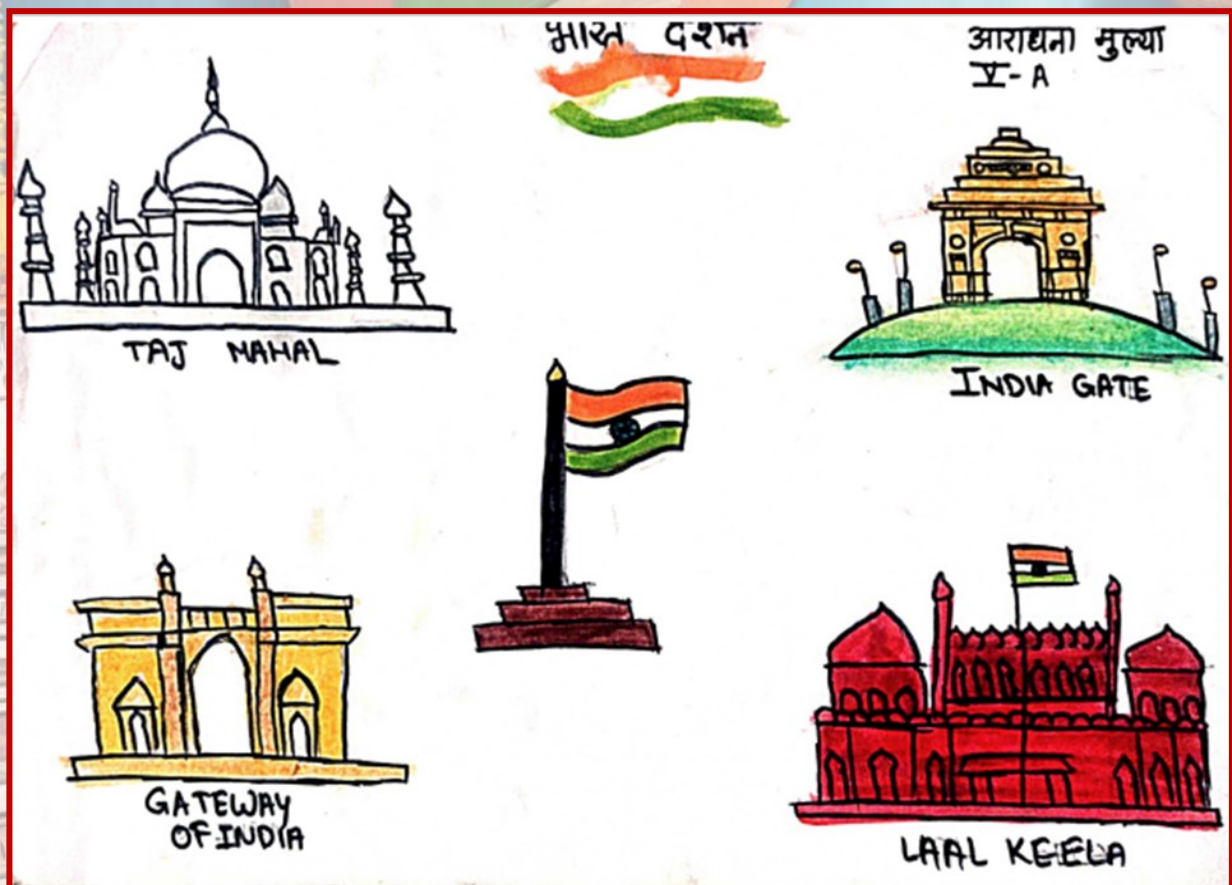
*Aarzoo Raut (XC)*

## Bharat Darshan



Bharat India , is the oldest civilization in the world called the land of diversity be it culture or geographically. It's a colorful land with various types of food, people's speaking different languages , different festivals and practicing different religions and traditions. A large number of festivals are celebrated in our country like Ganesh Chaturthi, Raksha bandana, Diwali, Christmas, Holi etc . Our country is also a great tourist destination for its Incredible diversity ,rich cultural heritage and Monuments. From places like the North of Jammu and Kashmir, to the South of Kanyakumari , Kerala, to the West of Maharashtra, Gujarat, to the east parts of Assam and Kolkata. Each and every State of India has its own charm, vibrant colours and beauty. I love my country India.

*Basil C. Eldo - VII C*





## BHARAT DARSHAN

"Bharat Darshan" –Albeit these are just two Hindi words however they are enriched with lots of emotions and have a story to tell. “Darshan” or paying a visit signifies the importance that we are talking about something that is worthwhile visiting- which is in this case is our country.

Bharat Darshan though refers to the concept or journey where individuals or groups would explore various parts of Bharat, often for tourism, pilgrimage, or cultural experiences however only when one has traversed the length and breadth of this country he/she actually gets to know about the vastness, diversity and rich history this country.

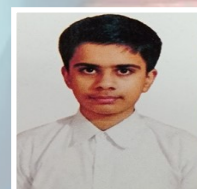
Bharat Darshan allows people to discover varied landscapes - if someone is fascinated by white-snow clad mountains and sceneries, they can visit the northern part of India. If someone enjoys hilly areas and rains, they can go to eastern part of India. Those who love beaches can fulfil their wishes at southern India and western India offers the dry and scenic beauty of deserts. Traveling across the diverse landscapes of India during Bharat Darshan is like flipping through the pages of a living history book.

Due to its diverse climatic range, Bharat has equally diverse range of flora and fauna to offer. Bharat boasts of bustling metropolises to the serene villages tucked away in the countryside. Bharat is a majestic country with a gamut of historical places, cities with old heritage, lots of historic monuments, and pilgrim places. Bharat similarly has a huge variety in cuisines being prepared, customs being followed, traditional attires being worn, festivals being celebrated, and languages being spoken which all change as we move from one state to another. In short, Bharat Darshan is a kaleidoscope of cultures, colours and contrasts.

"Bharat Darshan" is not just a physical journey; it's a soulful exploration that leaves an indelible mark on the heart. It's a journey that inspires, enlightens, and enriches, reminding all that country's beauty lies not just in its landscapes but in the incredible tapestry of life that unfolds before our eyes.

***Jai Bharat.***

***Dev Nirmal - 8C***



### कश्मीर: सौंदर्य और सांस्कृतिक रंग

कश्मीर सांस्कृतिक धरोहर और सौंदर्य से भरा हुआ है। यहां की अनूठी सांगीतिक परंपरा, विविध भूगोल, और अद्वितीय कला-संस्कृति का संगम हर कदम पर महसूस होता है। कश्मीर की बात करें तो यहां की भौतिक सौंदर्यता अपनी जगह अलग है। बर्फ की ढेरों चादरों से ढके पहाड़, शानदार दल झील, और मुघल बागों का अलगाव – ये सभी कश्मीर को एक आकर्षक और प्राकृतिक स्वरूप देते हैं। कश्मीरी की सांस्कृतिक समृद्धि भी अद्वितीय है। यहां की बोलचाल कश्मीरी भाषा में होती है, जिसमें पर्सो-अरबी लिपि का इस्तेमाल होता है। पश्मीना शॉल, कश्मीरी कारपेट, और पेपर-मैशे के आइटम्स जैसे हस्तशिल्प इस स्थान की पहचान हैं। वहां के मिठे बोल और भोलेभाले लोगों का सामंजस्यपूर्ण वातावरण भी इस स्थान को विशेष बनाता है। समृद्ध, सौंदर्य, और सांस्कृतिक विविधता का यह संगम कश्मीर को एक अद्वितीय स्थान बनाता है जो सदैव लोगों को आकर्षित करता है।

***वशिष्ठ पंडित, IX B***





## Here I Go....

In my Dream, Amidst the rhythmic clatter of rails,  
With a ticket in hand, I boarded the train,  
I embarked on Bharat Darshan's trails.  
As it chugged through landscapes, a mesmerizing terrain.

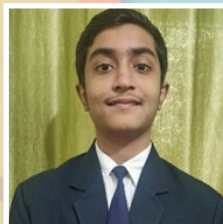
The clickety-clack of wheels on tracks,  
Carried me through historic towns and age-old relics,  
Revealing the array of India's story,  
With each passing mile, a new chapter's epics.

In the heart of India, I began my quest,  
With each destination, I felt truly blessed.  
From snow-capped peaks to desert's golden sand,  
The panoramic view from the window was grand.

As I stepped out onto the ancient soil,  
In a car, I continued, my heart began to coil.  
Narrow lanes and bustling bazaars so alive,  
In every corner, a piece of history did thrive.

In the car's rearview mirror, memories etched in gold,  
Stories of a land, timeless and bold.  
Through millennia, it has weathered the storm,  
Empires have risen, and empires have worn.

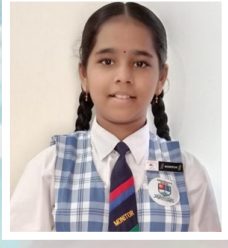
With rails and car, I explored this vast land,  
In each moment, I felt the touch of its hand.  
Bharat Darshan, a voyage both near and far,  
In its embrace, I found my guiding star.



***PRATEEK TRIPATHY - VIII D***



## भारतीय एकात्मता



कुणी हिंदू व मुसलमान,  
कुणी शीख आहे,  
अभिमान हा मला की,  
मी भारतीय आहे.  
भाषा या वेशभूषा,  
किती वेगळ्या निराळ्या,  
प्रिय ही एक भाषा,  
मी भारतीय आहे.

आपला भारत हा विविधतेने नटलेला देश आहे. भारत हा धर्मनिरपेक्ष देश आहे. आपल्या देशात सर्वांना समान अधिकार आहे. भारतात अनेक प्रदेश आहेत, जेथे वेगवेगळ्या जाती धर्माचे लोक राहतात. पंजाब प्रदेशात शीख लोक राहतात, अनेक राज्यांमध्ये मुस्लिम लोक बहुसंख्य आहेत. भारतात प्रत्येक प्रदेशामध्ये भाषा ही बदलत जाते. मराठी, नेपाळी, तमिळ, मल्याळम, काश्मिरी, मणिपुरी, उडिया यासारख्या २० पेक्षा जास्त प्रमुख भाषा भारतात बोलल्या जातात. भारताचा इतिहास सुद्धा अतिशय प्राचीन आहे. भारतावर आधुनिक व मध्ययुगीन काळात अनेक विदेशी शासकांनी आक्रमण देखील केले. पूर्वी भारत देश 'सोन्याची चिमणी' म्हणून ओळखला जायचा. या शिवाय भारतात अनेक ऐतिहासिक आणि सुंदर पर्यटन स्थळे आहेत. दरवर्षी लाखों विदेशी लोक भारतात येतात. भारतात मोठ-मोठी प्राचीन मंदिरे आहेत. या मंदिरांची वस्तु कला आणि सौंदर्य अनुभवण्यासाठी भारतसह जगभरातील लोक येतात. इतकी विविधता असताना देखील भारतीयांमध्ये आपापसातील प्रेम आणि बंधुत्वाची भावना कायम आहे. वेगवेगळे धर्म, वेगवेगळ्या भाषा असतांनाही एकामेकांसोबत न भांडत प्रत्येक धर्माचा सन्मान करणे आपली भारतीय संस्कृति शिकवते आणि हेच अनेकतेत एकतेचे प्रतीक आहे. खरोखर आपला भारत देश महान आहे.

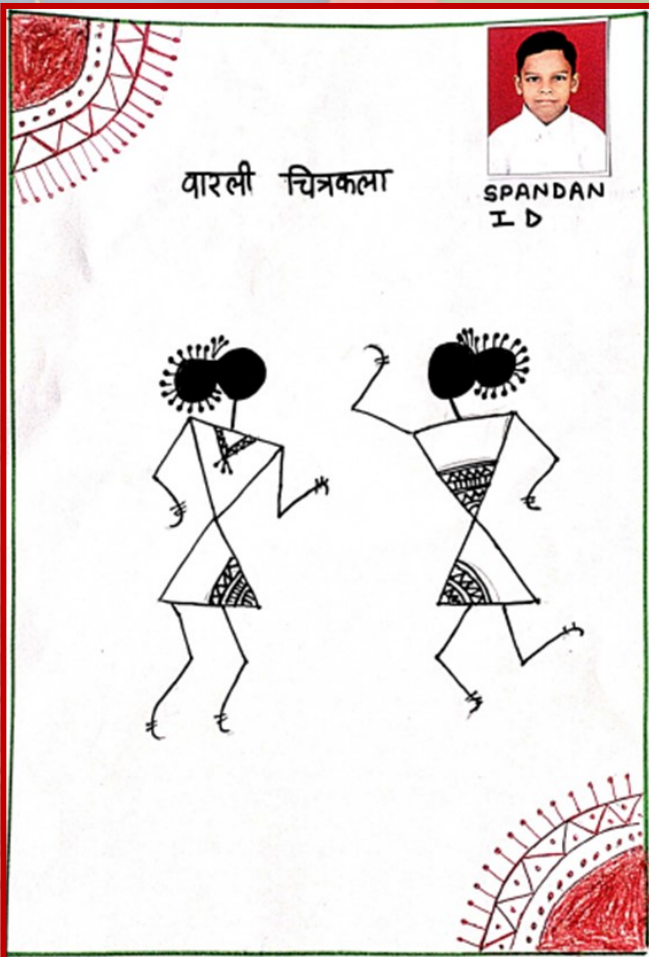
अंजली निवृत्ती भोसले

इयत्ता - ८वी 'ड'

## मुंबई दर्शन – भारत दर्शन

जहाँ अलग - अलग प्रकार के होते हैं लोग  
अलग - अलग प्रकार के चढते हैं भोग  
जैसे इस समुद्र में होती है यह मछलियाँ अनेक  
मुंबई में लोग रहते हैं मिलकर सभी एक  
अगर करने हों भारत के दर्शन  
तब चढ़ जाओ मुंबई की रेल पर  
जहाँ बड़ी से बड़ी इमारतें हैं  
जहाँ हैं छोटे -छोटे झोपड़े  
और अलग अलग प्रकार के होते हैं कपड़े  
नदी पहाड़ गाँव या बस्ती,  
सब करते हैं साथ में मस्ती  
करते सभी साथ मिलकर,  
करते मुंबई रेल का सुहाना सफ़र  
विभिन्न लोग करते साथ में प्रवास  
विभिन्न स्थानों का देते हैं आभास  
जैसे हर जाति के लोग करते हैं निवास  
मुंबई दर्शन को भारत दर्शन बनाने का  
था यह एक छोटा- सा प्रयास

कृतिका  
XC





## भारत को पहचानो

यह जन्मभूमि; यह कर्मभूमि; यह मातृभूमि है प्यारी,  
भारत नाम से जानी जाती; पितृभूमि हमारी।  
पूरे विश्व में हमारे ही देश के चर्चे हैं,  
लेकिन अपने देश के बारे में क्या जानते हम बच्चे हैं?  
दिल्ली में सिर्फ मुगलों की कब्र नहीं अमर जवान ज्योति भी है,  
जहां हमारे वीर जवानों को श्रद्धांजलि दी गई है।  
मुंबई को सिर्फ श्री गणेश नहीं मुंबादेवी भी प्यारी है,  
आखिर नारी शक्ति क्या कम न्यारी है?  
केरल में सिर्फ इडली सांभर नहीं नीलकुरिंजी के फूल भी है,  
जो बारह वर्षों में एक बार केरल की चट्टानों को बैंगनी चादरों में लपेटे भी है।  
अब हर स्थल के विवरण को तो मैं इस कदर कर नहीं सकता,  
समय की तंगी भी है और गिनती का बंधन भी।  
तो मित्रों संदेश बस इतना है मेरा; अब तुम संभल जाओ,  
अपने देश के बारे में थोड़ा और तुम जान जाओ।  
अपने इस गर्वभूमि को जानकर गौरवान्वित महसूस करो,  
घर बैठे ही मन की आंखों से भारत दर्शन का आनंद लो।



वशिष्ठ पंडित, IX B

भारत मेरा प्यारा देश,  
सब देशों से न्यारा देश,  
हिंदू-मुस्लिम भाई-भाई,  
मिलकर रहते सिख इसाई।

इसकी धरती उगले सोना,  
ऊँचा हिमगिरी बड़ा सलोना,  
सागर धोता इसके पांव।  
हैं अलबेले इसके गाँव।

पर्वत, नदिया, झरने यहाँ के,  
सबको लगते प्यारे-प्यारे,  
सुंदर-सुंदर भारत देश।  
सबसे अलग है मेरा देश।

अथर्व कक्षा छठी 'ब'

## अतुल्य भारत, अमूल्य भारत

सूरज की किरणों में रंगीं धरा,  
भारत दर्शन की यही सुंदर विचारधारा।

पहाड़ों की ऊँचाई, घाटियों की गहराई,  
भारत दर्शन है सुंदरता की कहानी।

यमुना का तट, गंगा का किनारा,  
भारत दर्शन, हर रूप में है प्यारा।

राजस्थान की रेगिस्तानी हवा,  
भारत दर्शन, है सबसे प्यारा।

वाराणसी का घाट, खगौली रात,  
भारत दर्शन, अद्वितीय साथ।

हिमाचल की बर्फबारी, ओडिशा की सावनी,  
भारत दर्शन, सबको है यहाँ से प्यारी।

गिर वन का वन्यजीव, गुजरात की सागरी,  
भारत दर्शन, है सारे रंगों में भरी।

ताजमहल की मिसाल, राजपूताना का गौरव,  
भारत दर्शन, बनता है विश्व में महागौरव।

हर्षित काचरू





भारत कहें या हिंदुस्तान,  
जिसमें है तमाम भाषाओं का मान ।  
उनमें से एक हिंदी भाषा,  
जिसमें बसी हमारे मन की अभिलाषा।  
हिंदी से ही हो सकी भारत की पहचान,  
हिंदी के उत्थान में करके पावन कर्म,  
यही राष्ट्रभाषा बने,  
चलो निभाएं यही धर्म ।  
जन-जन की भाषा है हिंदी ,  
भारत माता के मन की आशा है हिंदी ।

लगा रहे प्रेम हिंदी से,  
चलो मनाएं यह दिवस साथ में,  
हिंदी है हिंदुस्तान की जान,  
हमेशा रखो इस भाषा का मान ।

बुशरा  
सातवीं 'ब'



## भारत दर्शन

स्मारक है बसे जहाँ,  
होती है भीड़ वहाँ।  
दर्शनीय है हमारा भारत,  
क्योंकि इसमें है अनेक स्मारक ।  
ताजमहल है सबसे निराला क्योंकि, इसका जन्म हुआ है प्यार के द्वारा ।  
भारत है बहुत महान क्योंकि इससे जुड़ी, है अनेक स्मृतियाँ और शान ।

Keshav

VIIA

## भारत

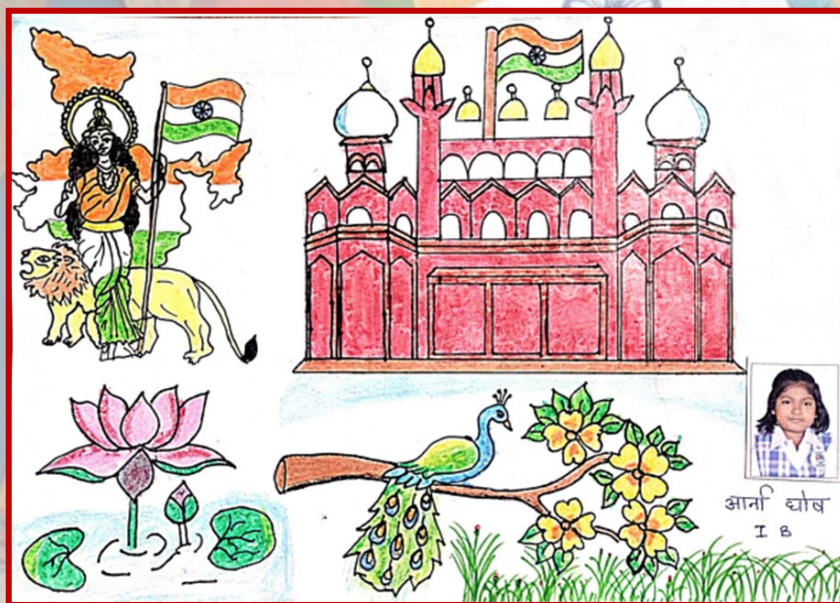
भारत की सतह हैं बहुत बड़ी ,  
जिसमें हैं अनेक स्मारक गड़ी।  
आईए आपको भारत के दर्शन कराए,  
इसके बारे में विस्तार से बताए।

ताजमहल हैं एक प्यार की निशानी  
जिसको शाहजहां ने थी,  
बनाने की ठानी ।

एक बार तुम आओगे,  
तो बिना दर्शन किए नहीं जाओगे।  
भारत हैं सोने का देश,  
जिसमें घूमने आते हैं परदेश।

भारत हैं खून-मिट्टी की ज़मीन,  
एक बार कदम रखोगे तो होगा यक़ीन।  
तो आप यहाँ आए,  
और इनके दर्शन पाए।

Harshit VII A



## नारे :

1. भारत हमारी माता है, जो हमारी भाग्य विधाता है।
2. यहाँ वृक्षों और नदियों में पूजे जाते हैं भगवान, इसलिए है मेरा भारत सबसे महान।
3. जहाँ सबको खुशियाँ मिलती सहर्ष, ऐसा देश है हमारा भारतवर्ष।
4. स्वतंत्रता भारत की शान है, लोकतंत्र की आन है।
5. हमारा भारत है सबसे महान, जिसके लिए क्रांतिकारियों ने लुटाए अपने प्राण ।
6. मंगल पर गया है उससे आगे भी जायेगा, भारत विश्वगुरु बनकर दिखलायेगा।

मानस व ओमकार - 6 ब



## गौरवशाली भारत

भारत है मेरी शान  
भारत है मेरा मान,  
भारत ही मेरी पहचान  
मेरा भारत है विश्व में सबसे महान!!!

रानी लक्ष्मी बाई की कुर्बानी हो या  
भगत सिंह का त्याग,  
सरोजिनी नायडू के भावपूर्ण कविता  
या चाहे वो हो गांधी जी के सत्य का मार्ग।

दीवाले के उज्ज्वल दीप हो  
या होली के अतबुथ रंग,  
मिलजुलकर हम मनाते हैं  
हर तरह का प्रसंग।

बहुत सारे संदेश दे जाते हैं  
भारत के अनेक पर्व,  
इसलिए मुझे भारतीय नागरिक होने पर  
है बहुत अधिक गर्व।

भारत की विशेषताएं बताने के लिए  
मुझे शब्द लग रहे हैं कम,  
भारत को सदैव ऐसा रखने का  
वादा करेंगे हम।

भारत है अब सशक्त  
और यहा पर है अब सुविधाएं सारी,  
हर क्षेत्र में आगे बढ़ चुका है भारत  
क्या ये भविष्य में पड़ेगा दूसरे देशों पर भारी?

कुछ तो है हमारे भारत में  
जो दर्शकों को अपने ओर आकर्षित कर लेता है,  
ये है हमारी संकृति और मान  
जो दूसरे देशों को भी सीख दे देता है।

भारत की हवा है ताज़ी  
भारत है एक जगह निराली,  
सबसे प्यारा है ये देश हमारा  
सचमे मेरा भारत है गौरवशाली।

यह देश है अपने आप में ही कुछ खास  
इसको सुरक्षित रखने का हम सब करेंगे प्रयास,  
हम सब करेंगे प्रयास!!!

क्रिशा शेटी - ७ ड



## भारत दर्शन

भारत देश कमाल हमारा,  
भारत बेमिसाल हमारा।  
पंजाब के गुरुजीओं की वाणी,  
गंगा का बहता शुद्ध पानी।

हिमालय की चोटी से,  
महाराष्ट्र के मोती से,  
भारत हमारी जान है,  
भारत की ये ही पहचान है।

राजस्थान के रेत में ममता की स्पर्श कहती है,  
महलों से भरे मरुथल व राणा पद्मावती की संघर्ष कहती है,  
भारत को कम मत समझों,  
भारत में है दम यह समझों।

गुजरात में जलेबीओ की मिठास,  
तमिल नाडू के मंदिर है खास।  
भारत देश महान है  
वतन पर फिदा मेरी जान है।

Vinayak Bhatia - VII-A



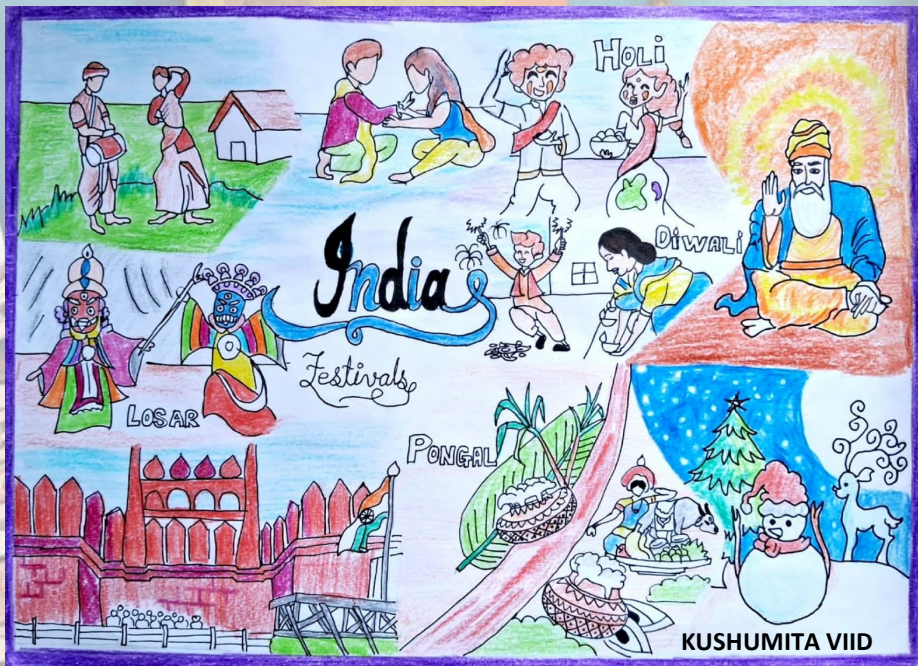


## भारत दर्शन

भारत , आधिकारिक तौर पर भारत गणराज्य , दक्षिण एशिया में एक देश है। दक्षिण में हिंद महासागर , दक्षिण-पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण-पूर्व में बंगाल की खाड़ी से घिरा , यह पश्चिम में पाकिस्तान के साथ जमीनी सीमा साझा करता है; उत्तर में चीन , नेपाल और भूटान ; और पूर्व में बांग्लादेश और म्यांमार । हिंद महासागर में, भारत श्रीलंका और मालदीव के आसपास है ; इसके अंडमान और निकोबार द्वीप समूह थाईलैंड , म्यांमार और इंडोनेशिया के साथ समुद्री सीमा साझा करते हैं। भारत में 28 राज्य और 8 केन्द्र शासित प्रदेश हैं। भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। इसके उत्तर में विशाल हिमालय पर्वतों की श्रृंखला है तो दक्षिण में हिंद महासागर हैं तो एक ओर दक्कन का पठार है तो वही सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान भी। थार का विस्तृत क्षेत्र है तो दूसरा ओर समुद्र तट भी। भारत विविधता में एकता का देश है जहाँ आपको हर तरह के लोग अपनी अलग-अलग संस्कृति, रीति-रिवाज का पालन करते हैं और इसी सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक हमारे देश में दिखाई देते हैं। भारत दर्शनीय स्थल में आगरा का नाम बेझिझक लिया जाता है क्योंकि दुनिया के सात अजूबों में से एक अजूबा यहीं स्थित है। सफ़ेद संगमरमर से बने ताजमहल को शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज महल की स्मृति में बनवाया था। इसके पिछली तरफ यमुना नदी बहती है। कश्मीर को भारत का स्वर्ग कहा जाता है। बर्फ से ढके ऊँचे पहाड़ और पेड़-पौधे देखकर आप प्रकृति के रंग में रंग जाएंगे।

गुलमर्ग, डल झील, सोनमर्ग, पहलगाम आदि जैसी खूबसूरत स्थान आपको मग्न कर देंगे। महाराष्ट्र के औरंगाबाद में स्थित अजंता एवं एलोरा की गुफाएँ बहुत-सी चट्टानों को काटकर बनाई गई हैं। गुफा के अंदर आपको खूबसूरत बौद्ध धर्म से संबंधित चित्रकारी और मूर्तियाँ देखने को मिलेंगी। यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर के रूप में रखा है। भारत के सबसे अविश्वसनीय रूप से खूबसूरत राज्यों में से एक केरल है जो देश के दक्षिणी भाग में स्थित है। केरल को देवभूमि भी कहा जाता है। केरल अपने समुद्र तटों, झरनों, प्राचीन महलों और बैकवाटर के लिए जाना जाता है। “गुलाबी शहर” के नाम से जाना जाने वाला यह शहर राजस्थान में स्थित है। यह शहर विभिन्न प्रकार के किलों एवं प्राचीन इमारतों से भरा पड़ा है। लोगों के बीच सबसे ज़्यादा प्रख्यात है हवा महल। आप यहाँ अंबर किला, जयगढ़ किला, नाहरगढ़ किला, जंतर-मंतर, रामबाग महल आदि घूम सकते हैं। पश्चिम बंगाल में स्थित सुंदरबन, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र सौंदर्य एवं ऐतिहासिक धरोहर से समृद्ध है। भारत भूमि सदियों से अपनी यही विशेषताओं के लिए विश्वप्रसिद्ध है।

**नितिका नितिन पोखरकर - ७ वी 'अ'**





## भारत

भारत का झंडा सदा लहराएगा ,  
भारत नाम हर जगह में गूँजेगा ।  
गूँज रहा है दुनिया में हिंदुस्तान का नारा,  
चमक रहा हैं आसमान में तिरंगा हमारा ।

वीर सैनिकों ने दी हैं अपनी जान,  
भारत हैं हमारी शान ।  
भारत को अपने दिल में बसाएँगे ,  
भारत का झंडा ऊँचा लहराएँगे।

भारत हैं हमारा देश ,  
उसमे न रहे कलेश ।  
पूजते हैं हम भगवन ,  
भारत वासी हैं विद्वान ।

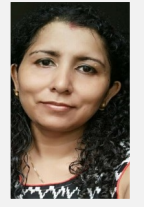
नाम: आशीं राणा - ७ बी

भारत दर्शन है भूगोल का अद्वितीय संगम,  
हर कोण में छुपा है अपना अनुपम रंग।  
हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक,  
संस्कृति के इन्द्रधनुष में चमके हर अंग।

गंगा की लहरें, कावेरी की कहानी,  
रेगिस्तानी की धूप, मणिपुर की मनमानी।  
उतराखंड के पहाड़, केरल की हरियाली,  
हर प्रांत का अपना स्वाद, अपनी ही बानी।

बंगाल की ऐतिहासिकता, मुंबई का शोर,  
पंजाब के खेत हो या अंदमान का अंतिम छोर।  
हर कण, हर बूंद अदभुत, अलग है हर भोर,  
फिर भी विश्व भर न दिखे, ऐसी एकता की डोर।

— Siji Gopal



Kushumita Das





## भारत दर्शन

"भारत दर्शन" वह यात्रा है जिससे हम अपने देश की अद्वितीयता, सांस्कृतिक समृद्धि, और भूगोल की समृद्धि को अध्ययन कर सकते हैं। यह यात्रा हमें उन अनगिनत रंगों, स्थलों, और संस्कृतियों से मिलती है, जो हमारे देश को एक सबसे अद्वितीय और समृद्धि शील राष्ट्र में बनाते हैं।

भारत दर्शन की शुरुआत उत्तरी हिमालय से होती है, जहाँ आपको विशाल बर्फीले पर्वतों और प्राकृतिक सौंदर्य का साहसी समाधान मिलता है। यहाँ की पर्वतीय ठंडी हवा, जीवनशैली और शांति का आभास आपको अद्भुत अनुभव प्रदान करता है। इसके बाद, दर्शन का मार्ग दिल्ली, भारत की राजधानी, की ओर बढ़ता है, जो हमारे देश का राजनीतिक, सांस्कृतिक, और ऐतिहासिक केंद्र है। यहाँ के ऐतिहासिक स्थलों में रेड फ़ॉर्ट, कुतुब मीनार, और इंडिया गेट शामिल हैं, जो विभिन्न समयों में निर्मित होकर हमें दिखाते हैं कि यहाँ का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास कैसे हुआ है।

आगे बढ़ते हुए, आगरा की सुनहरी कहानी हमें ताजमहल के साथ रंगीन इतिहास का अनुभव कराती है। ताजमहल ने न केवल वास्तुकला के क्षेत्र में नए मायाजल को स्थापित किया, बल्कि प्रेम और साहस की कहानी भी सुनाई गई है। राजस्थान के सुंदर प्रदेश में हम देखते हैं कि कैसे राजस्थान की रेगिस्तानी धरती भी हमें भारतीय सांस्कृतिक विविधता के अनगिनत रूपों का प्रतिष्ठान दिखाती है। यहाँ के रणथम्भोर का राजा, जोधपुर का उमेद भवन, और जैसलमेर का सोनार किला हमें इस प्रदेश के गौरवशाली इतिहास का विवादित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

दक्षिण के तटीय इलाके में हम देखते हैं कि कैसे केरल की सुंदरता, तमिलनाडु की परम्परागत कला और अन्य स्थानीय सांस्कृतिक प्रवृत्तियों ने भारतीय दर्शन को और भी रंगीन बना दिया है। यहाँ के कूडलम नृत्य और कथकली नृत्य के माध्यम से दर्शकों को भारतीय कला का अद्वितीय अनुभव होता है। भारत दर्शन के दौरान हमें दिखता है कि भारतीय सांस्कृतिक विविधता न केवल स्थानीय स्तर पर है, बल्कि यह विश्व स्तर पर भी पहचान प्राप्त कर रही है। यहाँ के समर्थन में, भारतीय शिल्पकला, साहित्य, संगीत, और नृत्य का अद्वितीय संगम हमें दिखाई देता है। इस यात्रा के माध्यम से हम जिन विभिन्न स्थलों को देखते हैं, वह न केवल सांस्कृतिक समृद्धि का दर्शन करते हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि भारत कैसे विभिन्न कला और विज्ञान के क्षेत्र में महात्मा बन चुका है।

भारत दर्शन का अर्थ यह नहीं है कि हम केवल स्थानों की यात्रा कर रहे हैं, बल्कि यह भी है कि हम अपने देश की मौलिकता और सांस्कृतिक विविधता को समझते हैं और उसे बनाए रखने का प्रयास करते हैं। भारतीय दर्शन से ही हम देश के विभिन्न हिस्सों में भिन्नता का समर्थन करते हैं और एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर रहने की महत्वपूर्णता को समझते हैं। इस यात्रा से हम यह भी सीखते हैं कि हमारे देश में विभिन्न सांस्कृतिक परंपराएं एक समृद्धि और सामंजस्य का केंद्र हैं, जो हमें एक दूसरे के साथ जुड़े रहने की शिक्षा देती हैं।

भारत दर्शन हमें यह भी बताता है कि देश की सांस्कृतिक विविधता में हमें गर्व करना चाहिए और उसे बचाए रखने के लिए हमें संयम और सहयोग का आदान-प्रदान करना चाहिए। इससे हम एक बेहतर और समृद्धि शील भविष्य की दिशा में काम कर सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं।

समाप्त करते समय, भारत दर्शन हमें यह बताता है कि हमारा देश विश्व का एक महान और समृद्धि शील राष्ट्र है, जो अपने समृद्धि, सांस्कृतिक विविधता, और ऐतिहासिक विरासत के लिए जाना जाता है। भारतीय दर्शन से हम अपने देश को समझते हैं, उसके प्रति गर्व महसूस करते हैं और एक मजबूत एकता भावना का समर्थन करते हैं।



अर्चित सिंह - VIII C





## मेरा भारत मेरी पहचान

बहुत से कहते लोग हमें, क्या है पहचान तुम्हारी,  
बसी है जान हमारी कश्मीर से कन्याकुमारी,  
मेरे अंदर क्या-क्या बसा हुआ है, आज मैं तुम्हें सुनाता हूँ,  
कान खोलकर सुन लो आज अपनी पहचान बताता हूँ।  
जम्मू और कश्मीर, हिमाचल मेरे अंदर रहते हैं,  
पर्वत, झील और नदियाँ बहुत से झरने बहते हैं।  
दिल्ली, यूपी, उत्तराखंड, पंजाब आँख का तारा है,  
उड़ीसा में जन्म लिया, हरियाणा जान से प्यारा है।  
एमपी, छत्तीसगढ़, झारखंड, सिक्किम और बिहार हूँ मैं,  
बंगाल, असम, मेघालय और अरुणाचल का प्यार हूँ मैं,  
नागालैंड, मिज़ोरम, त्रिपुरा, मणिपुर है शान मेरी,  
तेलंगाना और राजस्थान, आंध्र प्रदेश है आन मेरी,  
महाराष्ट्र, गुजरात, केरला बसते मेरे मन में,  
गोवा और तमिलनाडु हर पल रहते अपनेपन में।  
दादरनगर हवेली, पांडीचेरी, लक्षद्वीप हूँ मैं,  
अंडमान और चंडीगढ़ हूँ, दिल्ली, दमनद्वीप हूँ मैं।  
गंगा, यमुना, सरस्वती और ब्रह्मपुत्र की धार हूँ मैं,  
सीता, सावित्री, अनसुईया सब पतिव्रता नार हूँ मैं।  
हरिद्वार और प्रयागराज हूँ, काशी जी का धाम हूँ मैं,  
जितने वीर शहीद हुए हैं, उन सबका पैगाम हूँ मैं,  
भारत देश की मिट्टी हूँ और हिंदसागर का पानी हूँ,  
देश के खातिर मर मिट जाऊँ, दुश्मन की परेशानी हूँ।  
ऋषियों की संतान हूँ मैं और गीता जी का ज्ञान हूँ मैं,  
वेदों की परिभाषा हूँ, सम्पूर्ण हिंदुस्तान हूँ मैं।  
अब मत पूछना क्या है पहचान तुम्हारी,  
बसी है जान हमारी कश्मीर से कन्याकुमारी।



प्रतीक त्रिपाठी - ८वी. ड

## भारत

मेरे सम्मान का सबसे महान शब्द  
जहाँ कहीं भी प्रयोग किया जाए,  
बाकी सभी शब्द फीके पड़ जाते हैं।

भारत हमारा है देश,  
जिसका एक ही है संदेश।  
सारा जग है परिवार हमारा,  
हमने सदा दिया ये नारा।

भारत बंधा है अहिंसा की डोर से,  
देता रहा है साथ हर देश को एक छोर से।  
आओ भारत को आत्मनिर्भर बनाएँ,  
हर दृष्टि से इसे शक्तिशाली जहाँ बनाएँ।  
जो इसके विकास में बाधा अटकाए,  
उसे शांत तारिके से हम समझाय।  
अनेकता में एकता ही हमारी शान है,  
इसलिए, हमारा भारत महान है।

Dev Nirmal - 8C





## भारतीय संस्कृती व वारसा

भारतीय संस्कृतीचा इतिहास समृद्ध व वैविध्यपूर्ण आहे. सिंधू संस्कृतीचा उदय व अस्त, आर्यांचे स्थलांतर, ग्रीक, पांशयन (Persian), शक, पहलव, कुशाण, हूण यांची प्राचीन काळातील आक्रमणे व त्यांचे भारतीयीकरण तसेच मध्ययुगीन काळातील इस्लामिक आक्रमणे व त्यांचे भारतीयीकरण या प्रक्रियेमधून भारतीय संस्कृती समृद्ध व वैविध्यपूर्ण झाली. हा संपूर्ण सांस्कृतिक प्रवास राजकीय, सामाजिक, आर्थिक(Financial), धार्मिक मन्वंतरांमधून घडतो, उत्क्रांत होतो. या मन्वंतरांच्या संदर्भासहित संस्कृतीचा केलेला अभ्यास अधिक सयुक्तिक ठरतो.

संस्कृतीचा अभ्यास म्हणजे नेमका कोणत्या घटकांचा अभ्यास हे स्पष्ट करणे आवश्यक आहे. संस्कृतीमध्ये भाषा व साहित्य, वास्तुकला तसेच संगीत, नृत्य, शिल्पकला, चित्रकला यांसारख्या कलाविष्कारांचा अंतर्भाव होतो. एखाद्या कालखंडातील संस्कृतीच्या या सर्व अंगांचा अभ्यास व दोन किंवा अधिक कालखंडांमधील त्यांचा परस्परसंबंध आणि उत्क्रांती यांचे आकलन अपेक्षित आहे. यासाठी किंबहुना इतिहासाच्या कोणत्याही अंगाच्या आकलनासाठी भारतीय इतिहासाची ढोबळ रूपरेखा पूर्णपणे समजून घेणे अत्यावश्यक ठरते. भारतीय अश्मयुगाचा यात अंतर्भाव करण्याची फारशी आवश्यकता नाही. अश्मयुगाचा ठउएफळ च्या पुस्तकांतून केलेला अभ्यास पुरेसा ठरतो. प्राचीन भारत (सिंधू संस्कृती, वैदिक काळ, मौर्य साम्राज्य, गुप्त साम्राज्य, मध्ययुगीन भारत (आद्य मध्ययुगीन काळ- चोल साम्राज्य, गुर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकूट, पाल यांचा संघर्ष); मध्ययुगीन काळ (सुल्तानशाही, मुघल साम्राज्य, दक्षिणेमध्ये विजयनगर व बहामनी राज्ये), आधुनिक भारत (कंपनीचा काळ, भारतीय राष्ट्रवादाच्या उदयाचा काळ, भारतीय स्वातंत्र्याची चळवळ, स्वातंत्र्योत्तर भारत) याला भारतीय इतिहासाची ढोबळ रूपरेखा म्हणता येईल. भारतीय संस्कृतीच्या संदर्भात आपण याचा विचार करू.

सिंधू संस्कृतीमध्ये त्या संस्कृतीची वैशिष्ट्ये, महत्त्वाची शहरे, राज्यव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, समाज, धार्मिक धारणा, लिपी, मृतदेह पुरण्याच्या पद्धती, महत्त्वाचे अवशेष व त्यांचा अर्थ आणि या संस्कृतीचा ज्ञास यांचा अंतर्भाव होतो. २०१४ च्या मुख्य परीक्षेमध्ये सिंधू संस्कृतीवरील प्रश्न या संस्कृतीमधील 'नगररचनेचा अभ्यास व त्याचे आजच्या नगररचनेसंदर्भातील उपयोजनाचे प्रमाण' या मुख्य मुद्द्यावरील विवेचनाची अपेक्षा ठेवतो. सिंधू संस्कृती व आर्यांचे आगमन यांबाबत इतिहासकारांमध्ये मतभेद आहेत. सिंधू संस्कृतीचे लोक व आर्य यांच्यामध्ये कोणता असा संबंध होता की सिंधू संस्कृतीच्या संपूर्ण ज्ञासानंतर आर्य आले हा मतभेदाचा मुख्य मुद्दा ठरतो. इतिहासकारांमधील वाद हा वाद म्हणूनच स्वीकारायचा असतो.

वैदिक काळापासून पुढे मात्र भारतीय इतिहास एका विशिष्ट उत्क्रांतीची साखळी दर्शवतो. वैदिक काळाची विभागणी दोन कालखंडात केली जाते- ऋग्वेदिक काळ व उत्तर वैदिक काळ. कारण ऋग्वेद रचला गेलेला काळ व त्यानंतरचा काळ हे उत्क्रांतीचे दोन टप्पे दर्शवतात. ऋग्वेदिक काळातील भटकी अर्थव्यवस्था उत्तर वैदिक काळात शेतीप्रधान होते. ऋग्वेदिक काळातील धार्मिक धारणा या साध्या व सोप्या होत्या. देवाची साधी गद्य स्तुती ही पूजा होती. बालविवाहाची प्रथा नव्हती तर विधवा पुनर्विवाहास संमती होती. स्त्रियांना शिक्षणाचा व सार्वजनिक सभांमध्ये सहभागाचा हक्क होता. इतकेच नव्हे तर ऋग्वेदाच्या काही ऋचा स्त्रियांनी रचल्या. उत्तर वैदिक काळात देवाची पद्य स्तुती (सामवेद), मंत्रांचा वापर (यजुर्वेद), जादुई मंत्रांचा वापर (अथर्ववेद) असा प्रवास दिसतो. याबरोबरच नंतरच्या वैदिक काळात यज्ञविधी व पशूबळी यांचे स्तोम वाढताना दिसते. ब्राह्मण साहित्यप्रकारामध्ये विधींच्या शास्त्रांचा ऊहापोह दिसतो. यज्ञविधी व पशूबळी यांच्या अतिरेकाला पहिली प्रतिक्रिया म्हणजे आरण्यक (ध्यानातून ज्ञानप्राप्ती) व उपनिषद (तत्त्वज्ञान) ही साहित्यकृती होय. या दोन्ही साहित्यकृतींनी विधींच्या अतिरेकावर टीका केली. ही प्रतिक्रिया मात्र वैदिक धर्मातर्गत प्रतिक्रिया ठरते.

विधी व पशूबळी यांच्या अतिरेकाला मिळालेल्या प्रतिक्रियांपकी वैदिक धर्माच्या अधिसत्तेला अमान्य करत वेगळे पर्याय निर्माण करणारी प्रतिक्रिया म्हणजे वेदोत्तर/मौर्यपूर्व काळात ६४ वेगवेगळ्या पंथांचा उदय. या ६४ पंथांपकी जैन व बौद्ध धर्मांनी खऱ्या अर्थाने वैदिक धर्माला पर्याय निर्माण केला व त्याहीपुढे जाऊन बौद्ध धर्माने नवे आव्हान निर्माण केले. या दोन्ही धर्मांच्या तत्त्वज्ञानाचा (जैन व बौद्ध साहित्य) सखोल अभ्यास अत्यंत आवश्यक ठरतो. या तत्त्वज्ञानाने भारतामध्ये धार्मिक सुधारणेचा पाया रोवला आणि भारतीय समाज व संस्कृतीवर दूरगामी परिणाम केला. विधी व पशूबळी यामध्ये ब्राह्मण व क्षत्रिय या वर्णांचे हितसंबंध गुंतले होते. क्षत्रियांना त्यांच्या अधिसत्तेला अधिमान्यता हवी होती तर ब्राह्मणांना उपजीविका. पशूंचा नाहक बळी पशूंची निकड असलेल्या वैश्य व शूद्रांच्या हितसंबंधाविरुद्ध गेला. एका बाजूला मोठा आर्थिक दर्जा असलेल्या वैश्य व शूद्रांना त्यास अनुसरून अपेक्षित सामाजिक दर्जा प्राप्त झाला नाही. या सर्वांची परिणती जैन व बौद्ध धर्मांची लोकप्रियता वाढण्यात व वैदिक धर्माची लोकप्रियता घटण्यात झाली. या व्यतिरिक्त या काळातील महत्त्वाची बाब म्हणजे महाजनपदांचा उदय. हासुद्धा एका तात्काळ उत्क्रांतीचा टप्पा ठरतो. ऋग्वेदिक काळातील भटक्या टोळ्या (जन) उत्तर वैदिक काळात स्थायिक होतात (जनपद). स्थिर प्राप्त झालेल्या मानवी वसाहतींची वाटचाल स्थिर शेती, अधिकच उत्पादन यातून नागरिकीकरणाकडे (महाजनपदे) होते. या नागरी केंद्राभोवती (महाजनपदे) राज्यांची निर्मिती होते. विविध स्रोतांमध्ये वेगवेगळे आकडे जरी असले तरी.



१६ महाजनपदांचा उदय मान्य केला जातो. यापकी वत्स, अवंती, कोसल व मगध ही बुद्धांच्या काळातील महत्त्वाची महाजनपदं होय. सर्व महाजनपदांमध्ये मगध सर्वश्रेष्ठ ठरते. मौर्यापूर्वी हिरण्यक (बिंबीसार, अजातशत्रू, उदयी इ.) शिशुनाग व नंद या घराण्यांनी मगधवर राज्य केले व त्याचा विस्तार केला. या काळातील तिसरा महत्त्वाचा धागा म्हणजे पारशी व ग्रीकांची परकीय आक्रमणे व त्यातून झालेली सांस्कृतिक देवाण-घेवाण. भारतावर आक्रमण करणारा सायरस हा पार्शियन सम्राट होता तर नंदांच्या काळात अलेक्झांडरचे आक्रमण होते. महाजनपदांच्या व्यतिरिक्त काही गणसंघांचे अस्तित्वही महत्त्वाचे ठरते.

मौर्य साम्राज्य हे भारतातील पहिले व एक वैभवशाली साम्राज्य म्हणून गणले जाते. मौर्यांच्या काळातील कौटिल्याचे अर्थशास्त्र (या १५ पुस्तकांच्या नेमक्या कालखंडाबाबत वाद आहे), अशोकचे स्तंभ व शिलालेख, अशोकाचा धम्म (हा धर्म नसून एक संहिता आहे), बौद्ध धर्माचा प्रसार, स्तूप, विहार, चत्य यांतील वास्तुकला यांचा अभ्यास महत्त्वाचा ठरतो. मौर्य साम्राज्याने जवळपास संपूर्ण भारतीय उपखंडाला एक केंद्रीभूत प्रशासन दिले व त्यातून रस्ते, कालवे, सिंचन यांसारख्या पायाभूत सुविधांचा विकास केला. या पायाचा उपयोग पुढील कालखंडातील (मौर्योत्तर/गुप्तपूर्व) आर्थिक भरभराटीला झाला. या व्यतिरिक्त ग्रीक, शक, पहलव, कुशाण यांच्या आक्रमणांमुळे जगातील अनेक भागांची भारतीय व्यापाऱ्यांना ओळख झाली. उत्तर - पश्चिमी भागात ग्रीक, शक, पहलव, कुशाण यांची राज्ये, पूर्वेकडे मौर्यांना उलथवून टाकणारे शुंग राज्य, दक्षिण मध्य भागात सातवाहनांचे राज्य, दक्षिणेत चोल, चेरा, पाण्ड्य, चालुक्य, काकतीय, होयसाळ इत्यादींची राज्ये असा काहीसा राजकीय पट दिसतो. या राजकीय विकेंद्रीकरणातून निर्मित स्वायत्ततेमुळे या काळात व्यापार, साहित्य, विज्ञान, कला, वास्तुकला अशा अनेक क्षेत्रांत मोठी प्रगती दिसून येते. या काळातील समाजाला स्थिर प्राप्त करून देणारा एक महत्त्वाचा घटक म्हणजे श्रेणी (Guild) होय. अनेक इतिहासकारांच्या मते, श्रेणींमधूनच भारतामध्ये संकीर्ण जातींचा उदय होतो. श्रेणींच्या माध्यमातून व्यापारास मोठी चालना मिळाली व भारताचा परकीय व्यापार वाढला. धातूकाम, वस्त्रोद्योग, मौल्यवान खडे, मोती, हस्तिदंत, काच, नाणी या उद्योगधंद्यांमध्ये मोठी प्रगती दिसून येते. यातून निर्माण झालेल्या समृद्धीचा परिणाम मौर्येत्तर व गुप्त काळातील समृद्ध सांस्कृतिक अभिव्यक्तीवर स्पष्ट जाणवतो. गांधार, मथुरा, अमरावती ही वैशिष्टपूर्ण कलेची केंद्रे, धर्मशास्त्र, वेदांग, पुराण या स्मृती साहित्याची निर्मिती, वैद्यकशास्त्र (चरक, शुश्रूत), संस्कृत व्याकरण (पाणिनी, पतांजली), नाटके व काव्य (हाल, अश्वघोष, भाष, वात्सायन), महायान बौद्ध तत्त्वज्ञान (नागार्जुनाचे माध्यमिक तत्त्वज्ञान, मिलिंदपान्हो), सहा पारंपरिक तत्त्वज्ञानांचा विकास (सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, वेदांत व मीमांसा), भगवद्गीतेचे तत्त्वज्ञान यांचा समावेश या काळातील संस्कृतीमध्ये होतो. तद्वतच, या काळात दक्षिण भारतामध्ये संगम साहित्याची निर्मिती होते, ज्यातून दक्षिण भारतातील राजकीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक जीवनावर प्रकाश पडतो.

संस्कृतीचा अभ्यास ऐतिहासिक उत्क्रांतीच्या अनुषंगाने करणे उपयुक्त ठरते. कोणत्याही कालखंडाच्या संस्कृतीचा अभ्यास करताना तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक व राजकीय संदर्भांचा अभ्यास आवश्यक ठरतो. कारण हा संदर्भ कलेच्या, साहित्याच्या अभिव्यक्तीमध्ये प्रतिबिंबित होतो. सिंधू संस्कृतीच्या कालखंडापासून मौर्येत्तर कालखंडापर्यंतचा संस्कृतीच्या प्रवासाच्या सारांशाचा आपण वेध घेण्याचा प्रयत्न या लेखात केला.

त्याचा संदर्भासहित सखोल अभ्यास आयोगाच्या परीक्षेसाठी महत्त्वाचा ठरतो. पुढील लेखात आपण गुप्त कालखंडापासून आधुनिक कालखंडापर्यंतचे सांस्कृतिक अवलोकन करू या.

**Adhish Panindre**





